JAIN REFERENCE LIBRARY ACHARYA SURENDRASURI JAIN TATVA GYANSHALA Page 1/3

जिस स्थान पर भव्य और अभव्य जीवों के स्थिति और अनुभाग बन्ध आदि कराने वाले परिणाम समान होकर प्रवृत्त होते हैं, उन्हें अभव्यसिद्धिक-प्रायोग्य परिणाम कहते हैं।

अभावप्रमाणता—प्रत्यक्षादेरनुत्पत्तिः प्रमाणाभाव उच्यते। साऽऽत्मनोऽपरिणामो वा विज्ञानं वाऽन्यवस्तुनि ॥ प्रमाणपञ्चकं यत्र वस्तुरूपे न जायते। वस्तुसत्तावबोधार्थं तत्राभावप्रमाणता ॥ (प्रमाल. ३८१-८२; प्र. क. मा. पृ. १८९ व १६५ उ.)।

प्रत्यक्षादि प्रमाणों की अनुत्पत्ति को, अथवा उक्त प्रत्यक्षादि प्रमाणरूप आत्मा के परिणत न होने को, अथवा अन्य वस्तु-विषयक विज्ञान को अभाव प्रमाण कहते हैं।

अभिगत—१. सम्मत्तम्मि अभिगओ विजाणओ वा वि अब्भुवगओ वा। (बृहत्क. भा. ७३४)। २. सम्यक्त्वे य आभिमुख्येन गतः प्रविष्टः सोऽभिगत उच्यते, यो वा जीवादिपदार्थानां 'विज्ञायकः' विशेषेण ज्ञाता सोऽभिगतः, यद्वा यः अभ्युपगतः—'यावज्जीवं मया गुरुपादमूलं न मोक्तव्यम्' इति कृताभ्युपगमः सोऽभिगतः। (बृहत्क. वृ. ७३४)।

जो सम्यक्त्व के अभिमुख हो चुका है, अथवा जीवादि पदार्थों का विशेषरूप से ज्ञाता है, अथवा जो यह प्रतिज्ञा कर चुका है कि मैं जीवन पर्यन्त गुरु के पादमूल को नहीं छोड़ूंगा, उसे अभिगत कहते हैं। यह उत्सारकल्पयोग्य के कुछ गुणों में से एक है।

अभिगतचारित्रार्य—देखो अधिगतचारित्रार्य।

अभिगमन—अभिगमनं सर्वबाह्यान्मण्डलादभ्यन्तरप्रवेशनम्। (जीवाजी. मलय. वृ. ३-२, पृ. १७९; सूर्यप्र. वृ. १३-८१)।

बाहिरी मण्डल से भीतरी मण्डल में प्रवेश करने को अभिगमन कहते हैं।

अभिगमरुचि—१. सो होइ अभिगमरुई सुअणाणं जेण अत्थओ दिट्ठं। एक्कारसमंगाइं पइण्णगं दिट्ठिवाओ य। (उत्तरा. २८-२३, पृ. ३२०)। २. अर्थतः सकलसूत्रविषयिणी रुचिरभिगमरुचिः। (धर्मसं. स्वो. वृ. २, २२, पृ. ३८)।

जिसने अर्थस्वरूप से ग्यारह अंग, प्रकीर्णक और दृष्टिवाद रूप सकल श्रुतज्ञान का अभ्यास किया है उसे अभिगमरुचि कहते हैं।

अभिगृहीत—१. अभिग्गहिदं यद्देशाभिमुख्येन गृहीतं स्वीकृतं अश्रद्धानम् अभिगृहीतमुच्यते। (भ. आ. विजयो. टी. ५६)। २. अभिग्गहिदं परोपदेशादाभिमुख्येन स्वीकृतम्, परोपदेशजम् इत्यर्थः। (भ. आ. मूला. टी. ५६)। ३. अभि आभिमुख्येन तत्त्वबुद्ध्या, गृहीतं यथा भौत-भागवत-बौद्धादिभिः। (पंचसं. स्वो. वृ. ४-२)।

२ दूसरे के उपदेश से ग्रहण किये गये मिथ्यात्व को अभिगृहीत मिथ्यात्व कहते हैं।

अभिगृहीत दृष्टि—अभिमुखं गृहीता दृष्टिः, इदमेव तत्त्वमिति बुद्धवचनं सांख्य-कणादादिवचनं वा। (त. भा. सिद्ध. वृ. ७-१८, पृ. १००)।

तत्त्व—यथार्थ वस्तुस्वरूप—यही है, इस प्रकार बुद्ध, सांख्य व कणाद आदि के वचनों पर श्रद्धा करने को अभिगृहीत दृष्टि कहते हैं।

अभिगृहीता (मिथ्यात्व) क्रिया—तत्राभिगृहीता त्रयाणां त्रिषष्टयधिकानां प्रवादिशतानाम्। (त. भा. सिद्ध. वृ. ६-६)।

तीन सौ तिरेसठ प्रवादियों के तत्त्व पर श्रद्धा रखने को अभिगृहीता क्रिया कहते हैं।

अभिगृहीता भाषा—१. जा पुण भासा अत्थं अभिगिज्झ भासिया सा अभिग्गहिया। (दशवै. चू. २८०, पृ. २३९)। २. अर्थमभिगृह्य योच्यते घटादिवत्। (दशवै. नि. हरि. वृ. २७७, पृ. २१०)। ३. भाषा चाभिगृहे बोद्धव्या—अर्थमभिगृह्य या प्रोच्यते घटादिवदिति। (आव. ह. वृ. मल. हेम. टि. पृ. ८०)। ४. अभिगृहीता प्रतिनियतार्थावधारणम्। (प्रज्ञाप. मलय. वृ. ११-१६६)। ५. अभिगृहीता प्रतिनियतार्थावधारणरूपा यथेदमिदानीं कर्तव्यमिदं नेति। यद्वा ×××अभिगृहीता तु अर्थमभिगृह्य योच्यते घटादिवत्। (धर्मसं. मान. स्वो. वृ. ३-४१, पृ. १२३)। ६. अनेकेषु कार्येषु पृष्टेषु यदेकतरस्यावधारणमिदमिदानीं कर्तव्यमिति सा अभिगृहीता ऽथवा घट इत्यादिप्रसिद्धप्रवृत्तिनिमित्तकपदाभिधानं सेति द्रष्टव्यम्। (भाषार. टी. ७८)।

१ अर्थ को ग्रहण करके जो भाषा बोली जाती है—जैसे 'घट' आदि—वह अभिगृहीता भाषा कही जाती है। ६ अनेक कार्यों के पूछे जाने पर 'इस समय इसे करो' इस प्रकार किसी एक का निश्चय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Mo. 9512234311 www.jainreferencelibrary.org jaintatvagyanshala@gmail.com

JAIN REFERENCE LIBRARY ACHARYA SURENDRASURI JAIN TATVA GYANSHALA Page 2/3

करने वाली भाषा को अभिगृहीता भाषा कहते हैं। अथवा प्रवृत्तिनिमित्तक प्रसिद्ध पदों के कथन को अभिगृहीता भाषा कहते हैं।

अभिग्रहमतिक—अभिग्रहा द्रव्यादिषु नानारूपा नियमाः, तेषु स्व-परविषये मतिः तद्ग्रहण-ग्राहण-परिणामो यस्यासौ अभिग्रहमतिकः। (सम्बोधस. वृ. गा. १६, पृ. १७)।

द्रव्यादिकों के विषय में जो अनेक प्रकार के नियम हैं उन्हें अभिग्रह कहते हैं। उक्त नियमरूप अभिग्रहों में स्व और पर के विषय में ग्रहण करने कराने रूप जिसकी मति (परिणाम) हुआ करती है, उसे अभिग्रहमतिक कहते हैं।

अभिघातगति (क्रियाभेद)—जतुगोलक-कन्दु-दारुपिण्डादीनामभिघातगतिः। (त. वा. ५,२४,२१)।

लाख का गोला, गेंद और काष्ठपिण्ड आदि की अन्य से ताड़ित होने पर जो गति होती है उसे अभिघातगति कहते हैं।

अभिजातत्व—१. अभिजातत्वं वक्तुः प्रतिपाद्यस्य वा भूमिकानुसारिता। (समवा. अभय. वृ. सू. ३५, पृ. ६)। २. अभिजातत्वं यथाविवक्षितार्थाभिधानशीलता। (रायप. टी. पृ. १६)।

२ विवक्षित अर्थ के अनुसार कथन की शैली का नाम अभिजातत्व है। यह पैंतीस सत्यवचनातिशयों में अठारहवां है।

अभिज्ञा (प्रत्यभिज्ञा)—'तदेवेदम्' इति ज्ञानमभिज्ञा। (सिद्धिवि. टी. ४–१, पृ. २२६, पं. ५)।

'यह वही है' इस प्रकारका जो ज्ञान (प्रत्यभिज्ञान) होता है उसे अभिज्ञा कहते हैं।

अभिधान-नामनिबन्धन—जो णामसद्दो पवुत्तो संतो अप्पाणं चेव जाणावेदि तमभिहाणणिबंधणं णाम। (धवला पु. १५, पृ. २)।

जो नामशब्द प्रवृत्त होकर केवल अपना ही बोध कराता है, उसे अभिधान-नाम-निबन्धन कहते हैं। यह नामनिबन्धन के तीन भेदों में से दूसरा है।

अभिधानमल—अभिधानमलं तद्वाचकः शब्दः। (धव. पु. १, पृ. ३३)।

मल-वाचक शब्द को अभिधानमल कहते हैं।

अभिधायकविधि—तद्-(अभिधेयविधि-) ज्ञापकश्चाभिधायकविधिः। (अष्टस. यशो. वृ. ३, ५०)।

विवक्षित अर्थ (अभिधेय) का ज्ञापन कराने वाली विधि को अभिधायक विधि कहते हैं।

अभिधेयविधि—यस्य बुद्धिः प्रवृत्तिजननीमिच्छां सूते सोऽभिधेयविधिः। (अष्टस. यशो. वृ. ३, ५०)।

जिसकी बुद्धि प्रवृत्ति की जनक इच्छा को उत्पन्न करे उसे अभिधेयविधि कहते हैं।

अभिध्या—सदा सत्त्वेष्वभिद्रोहानुध्यानम् अभिध्या। यथा—अस्मिन् मृते सुखं वसामः। (त. भा. सिद्ध. वृ. ६–१)।

प्राणियों के विषय में सदा अभिद्रोह के चिन्तवन करने को अभिध्या कहते हैं। जैसे—इसके मर जाने पर हम सुख से रह सकते हैं।

अभिनय—अभिनयः चतुर्भिराङ्गिक-वाचिक-सात्त्विकाहार्यभेदैः समुदितैरसमुदितैर्वाऽभिनेतव्यवस्तुभावप्रकटनम्। (जम्बूद्वी. वृ. ५-१२१, पृ. ४१४)।

कायिक, वाचनिक, सात्त्विक और आहार्य इन चार भेदों के द्वारा, चाहे वे समुदाय रूप में हों या पृथक् पृथक्, अभिनेतव्य (जिस वृत्तान्त को नकल करके प्रगट किया जाय) वस्तु के भाव को प्रगट करना, इसका नाम अभिनय है।

अभिनवानुज्ञा—अभिनवानुज्ञा नाम यदा किलान्यो देवेन्द्रः समुत्पद्यते तदा तत्कालवर्तिभिः साधुभिर्यदसावभिनवोत्पन्नतयाऽवग्रहमनुज्ञाप्यते सा तेषां साधूनामभिनवानुज्ञा। (बृहत्क. वृ. ६७०)।

जब कोई नया देवेन्द्र उत्पन्न होता है तब वह तत्कालवर्ती साधुओं के द्वारा अवग्रह (उपाश्रय) के लिये अनुज्ञापित किया जाता है, यह उन साधुओं की अनुज्ञा अभिनवानुज्ञा कही जाती है।

अभिनिबोध—१. अभिनिबोधनमभिनिबोधः। (स. सि. १–१३)। २. आभिमुख्येन नियतं बोधनमभिनिबोधः। (त. वा. १, १३, ५)। ३. अत्थाभिमुहो णियतो बोधः (अभिनिबोधः), स एव स्वार्थिकप्रत्ययोपादानादभिनिबोधकम्। (नन्दी. चू. पृ. १०)। ४. अत्थाभिमुहो निअओ बोहो जो सो मओ अभिनिबोहो। (विशेषा. भा. ८०, पृ. ३७)। ५. अर्थाऽभिमुखो नियतो बोधोऽभिनिबोधः। (आव. हरि. वृ. १, पृ. ७)। ६. अहिमुह-णियमिदट्ठेसु जो बोधो सो अहिणिबोधो। (धव. पु. ६, पृ. १५-१६)। ७. यत्तदावरणक्षयोपशमादिन्द्रियानिन्द्रियावलम्बाच्च

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Mo. 9512234311 www.jainreferencelibrary.org jaintatvagyanshala@gmail.com

JAIN REFERENCE LIBRARY ACHARYA SURENDRASURI JAIN TATVA GYANSHALA Page 3/3

मूर्तामूर्तद्रव्यं विकलं विशेषेणावबुध्यते तदभिनिबोधिकज्ञानम् । (पंचा. का. अमृत. वृ. ४१)। ८. अहिमुहणियमियबोहणमाभिणिबोहियमणिंदिइंदियजं । (गो. जी. ३०६)। ९. स्थूलवाग्गोचरानन्तरार्थस्य स्थायिनश्चिरम् । प्रत्यक्षं नियतस्यैतद् बोधादभिनिबोधनम् ॥ (आ. सा. ४-३२)। १०. अभिनिबोधो हेतोरन्यथानुपपत्तिनियमनिश्चयः । (लघी. अभय. वृत्ति ४-४, पृ. ४५)। ११. अभिमुखेषु नियमितेष्वर्थेषु यो बोधः स अभिनिबोधः, अभिनिबोध एवाभिनिबोधिकम् । (मूला. वृ. १२-१८७)। १२. अर्थाभिमुखोऽविपर्ययरूपत्वान्नियतो ऽसंशयरूपत्वाद् बोधः संवेदनमभिनिबोधः । स एव स्वार्थिकप्रत्ययोपादानादाभिनिबोधिकम् । (स्थानांग सू. ४६३, पृ. ३३०)। १३. अर्थाभिमुखो नियतः प्रतिनियतस्वरूपो बोधो बोधविशेषो ऽभिनिबोधः × × × । अथवा अभिनिबुध्यतेऽनेनाऽस्मात् अस्मिन् वेति अभिनिबोधः तदावरणकर्मक्षयोपशमः । (आव. मलय. वृ. १, पृ. १२; नन्दी. मलय. वृ. सू. १, पृ. ६५)। १४. अभिमुखो वस्तुयोग्यदेशावस्थानापेक्षी, नियत इन्द्रियाण्याश्रित्य स्व-स्वविषयापेक्षी बोधः अभिनिबोधः । (अनुयो. मल. हेम. वृ. १, पृ. २)। १५. अर्थाभिमुखो नियतो बोधोऽभिनिबोधः, × × × अभिनिबुध्यते वा अनेनास्मात् अस्मिन् वा अभिनिबोधः तदावरणकर्मक्षयोपशमः । (धर्मसं. मलय. वृ. ८१६, पृ. २९१)। १६. तत्र चायमाभिनिबोधिकज्ञानशब्दार्थः—अभि इत्याभिमुख्ये, नि इति नैयत्ये, ततश्च अभिमुखः वस्तुयोग्यदेशावस्थानापेक्षी, नियत इन्द्रियमनः समाश्रित्य स्व-स्वविषयापेक्षी बोधनं बोधो ऽभिनिबोधः । (कर्मवि. दे. स्वो. वृ. गा. ४, पृ. ६)। १७. लिङ्गाभिमुखस्य नियतस्य लिङ्गिनो बोधनं परिज्ञानमभिनिबोधः स्वार्थानुमानं भण्यते । (त. सुखबो. १-१३)। १८. धूमादिदर्शनादग्न्यादिप्रतीतिरनुमानमभिनिबोधः । (अन. ध. स्वो. टी. ३-४; त. वृ. श्रुत. १-१३)।

२ अर्थाभिमुख होकर जो नियत विषय का ज्ञान होता है वह अभिनिबोध कहलाता है। १६ वस्तु के योग्य देश में अवस्थान की अपेक्षा रख कर जो इन्द्रिय और मन के आश्रय से अपने नियत विषय का—जैसे चक्षु से रूप का—बोध होता है, उसे अभिनिबोध कहते हैं।

अभिनिवेश—अभिनिवेशश्च नीतिपथमनागतस्यापि पराभिभवपरिणामेन कार्यस्यारम्भः । स च नीचानां भवति । यदाह—दर्पः श्रमयति नीचान् निष्फल-नयविगुणदुष्करारम्भैः । श्रोतोविलोमतरणव्यसनिभिरायास्यते मत्स्यैः ॥ (योगशा. स्वो. वि. १-५३, पृ. १५६)।

नीतिमार्ग पर न चलते हुए भी दूसरे के अभिभव (तिरस्कार) के विचार से कार्य के प्रारम्भ करने को अभिनिवेश कहते हैं। यह नीच जनों के ही होता है। सो ही कहा है—नीच जन जो अभिमान के वशीभूत होकर निरर्थक व अनैतिक दुष्कर कार्यों को किया करते हैं उनका वह परिश्रम उन मछलियों के समान है जिनकी प्रवाह के विरुद्ध तैरने की आदत है।

अभिन्नदशपूर्वी—१. रोहिणिपहुदीण महाविज्जाणं देवदाओ पंचसया । अंगुट्ठपसेणाइं खुद्दयविज्जाण सत्तसया ॥ एत्तूण पेसणाइं मग्गंते दसमपुव्वपढणम्मि । णेच्छंति संजमत्ता ताओ जे ते अभिण्णदसपुव्वी । (ति. प. ४, ९९८-९९)। २. एत्थ दसपुव्विणो भिण्णाभिण्णभेएण दुविहा होंति । तत्थ एक्कारसंगाणि पढिदूण पुणो × × × रोहिणिआदिपंचसयमहाविज्जाओ सत्तसयदहरविज्जाहि अणुगयाओ किं भयवं आणवेदि त्ति दुक्कंति । एवं ढुक्कमाणाणं सव्वविज्जाणं जो लोभं गच्छदि सो भिण्णदसपुव्वी, जो पुण ण तासु लोभं करेदि कम्मक्खयत्थी सो अभिण्णदसपुव्वी णाम । (धव. पु. ९, पृ. ६८)। ३. दशपूर्वाण्यधीयमानस्य विद्यानुप्रवादस्था क्षुल्लकविद्या महाविद्याश्चाङ्गुष्ठप्रसेनाद्याः प्रज्ञप्त्यादयश्च तै[ताभि] रागत्य रूपं प्रदर्श्य, सामर्थ्यं स्वकर्माऽऽभाष्य पुरः स्थित्वा आज्ञाप्यतां किमस्माभिः कर्तव्यमिति तिष्ठन्ति । तद्वचः श्रुत्वा न भवन्तीभिरस्माकं साध्यमस्तीति ये वदन्त्यविचलितचित्तास्ते अभिन्नदशपूर्विणः । (भ. आ. विजयो. टी. ३४)। ४. दशपूर्वाण्युत्पादपूर्वादिविद्यानुवादान्तान्येषां सन्तीति दशपूर्विणः । अभिन्ना विद्याभिरप्रच्यावितचारित्रास्ते च ते दशपूर्विणश्च, विद्यानुवादपाठे स्वयमागतद्वादशशतविद्याभिरचलितचारित्राः । (भ. आ. मूला. टीका ३४)।

१. रोहिणी आदि महाविद्याओं के पांच सौ तथा अंगुष्ठप्रसेनादि क्षुद्र विद्याओं के सात सौ देवता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Mo. 9512234311 www.jainreferencelibrary.org jaintatvagyanshala@gmail.com